बिहारी : बिहारी रत्नाकर दोहा संख्या 16-20

डॉ. नवीन नंदवाना
हिंदी विभाग
मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर

बिहारी रत्नाकर- 16

झीनें पट में झुलमुली, झलकति ओप अपार।

सुरतरु की मनु सिंधु में, लसति सपल्लव डार।।

शब्दार्थ :-

झीनें = महीन, झुलमुली = कर्णाभरण विशेष, सुरतरु = कल्प वृक्ष, सपल्लव = पत्तों के संग।

भावार्थ

नायक से नायिका का रूप वर्णन करते हुए, दूती कहती है कि जब उसकी झुलमुली महीन घूघट में से बाहर की ओर झलकती है, तब उसकी अपार शोभा इतनी सुन्दर लगती है, मानो सागर में कल्पवृक्ष की डाल अपने पल्लवों के साथ लहरा रही हो ।

अलंकार - उत्प्रेक्षा।

बिहारी रत्नाकर- 17

डारे ठोड़ी-गाड़, गहि नैन बटोही, मारि।
चिलक-चौंध में रूप-ठग, हाँसी-फाँसी डारि।।

शब्दार्थ :-

बटोही = यात्री, मारि = मारकर,
चिलक चौंध = छवि रूपी चकाचौंध।

भावार्थ

नायक स्वयं नायिका की चिबुक का वर्णन करता है कि मेरे नेत्र रूपी बटोही उसकी छवि की चकाचौंध को ही भोर का प्रकाश समझकर मार्ग में सुबह-सुबह ही चल पड़े थे। रूप-रूपी ठग ने पकड़कर उन्हें मधुर हास्य-रूपी फाँसी लगाकर मार दिया और फिर चिबुक रूपी गड्ढे में जाकर डाल दिया अर्थात् नायिका के हास्य ने नायक को और अधिक आकर्षित कर लिया

विशेष

प्रायः यात्री रात के अन्तिम प्रहर की बेला में सबेरा समीप ही जान कर चल पड़ते हैं, किन्तु मार्ग में ठग उन्हें लूटकर मार डालते हैं।

अलंकार- सांगरूपक।

बिहारी रत्नाकर- 18

कीन्है हूँ कोरिक जतन, अब कहि काढ़ै कौनु।
भौ मनमोहन रूप मिलि, पानी में कौ लौनु।।

शब्दार्थ :-

लोनु = नमक (लवण)

भावार्थ

राधा अथवा कोई अन्य नायिका दूती से कहती है कि मेरा मन तो मोहन के रूप-सौन्दर्य में मिलकर उसी प्रकार उनसे एकाकार हो गया है, जिस प्रकार नमक पानी में मिल जाने पर जलमय हो जाता है। अब तो कोई कोटि यत्न कर ले, फिर भी यह उनसे एक क्षण के लिए पृथक् नहीं किया जा सकता है ।

विशेष

नमक को जैसे ही पानी में डाला कि वह जलमय हो जाता है; फिर कोई चाहे जितने यत्न करता रहे, वे दोनों अलग-अलग नहीं हो पाते। यहाँ नायिका यही प्रकट करना चाहती है कि अब तो वह नायक में ही लीन हो गई है। प्रेम में तन्मयता आ जाने पर फिर कोई भी भेद नहीं रह जाता ।

अलंकार— 'मन' में श्लेष, मीलित, काकुवक्रोक्ति और दृष्टान्त।

बिहारी रत्नाकर- 19

लग्यौ सुमनु ह्व है सफलु, आतप-रोसु निबारि।
बारी, बारी आपनी, सींचि सुहृदता बारि।।

शब्दार्थ :-

सुमनु = सुन्दर मन, फूल। सफलु = सफल, सुन्दर फलों वाला। आतप = क्रोध तथा गर्मी। बारी = बालिका, क्रम। बारि = वाटिका।

भावार्थ

मानिनी नायिका की सखी उससे कहती है कि तू क्रोध-रूपी गरमी को दूर करके अपनी वारी आने के कारण अरी बाबली बालिका, इस प्रेम रूपी वाटिका का सिंचन कर, जिससे इनके मन रूपी सुन्दर सुमन पर सफलता (प्रेम का फल, प्रेम मिलन) भी आ जाये।

अलंकार- यमक, रूपक, श्लेष तथा पुनरुक्ति।

बिहारी रत्नाकर- 20

अजों तर्यौना ही रह्यौ, श्रुति सेवत इक अंग।
नाकु बास बेसरि लह्यौ, बसि मुकुतनु के संग।।

शब्दार्थ :-

तर्यौना = कर्णाभूषण, अमोक्ष प्राप्त। श्रुति = कान, वेद।
नाकु = नासिका, स्वर्ग। मुकुतनु = मोती, मुक्त पुरुष।

भावार्थ

कोई सगुणोपासक किसी वैदिक भक्त का उपहास करते हुए कहता है कि तुमने अब तक श्रुति रूपी श्रुति (कान रूपी वेद) का ही अध्ययन किया है, अतः तर्योना (एक कर्णाभरण रूपी संसारी) बने हुए हो। क्या लाभ हुआ उनके एकान्त अध्ययन से ? अरे मुक्ताओं (मोती रूपी मुक्त पुरुषों) का साथ करने पर बेसर जैसे तुच्छों को भी नाकवास (नासिका रूपी स्वर्गधाम) मिल गया है।

विशेष

कान की अपेक्षा नाक का ऊँचा स्थान होता है, किन्तु कान का आभूषण तर्योना नीचे होता है, जबकि नाक का बेसर मोती के साथ से अधिक ऊंचा स्थान प्राप्त कर लेता है।

अलंकार-- श्लेष, रूपक तथा व्यतिरेक।

साभार :

बिहारी रत्नाकर : जगन्नाथ दास रत्नाकर

बिहारी सतसई : देवेन्द्र शर्मा ‘इंद्र’

धन्यवाद !